[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No. 2018

Sr. No. of Question Paper : 7891 IC

Unique Paper Code : 1201501

Name of the Paper : पाश्चात्य काव्यशास्त्र

Name of the Course : B.A. (H) Hindi – CBCS

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY KALKAJI, NEW DELHI

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अरस्तू के अनुकरण सिद्धांत की विवेचना कीजिए। (12)

अथवा

उदात्त का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसके विरोधी तत्त्वों पर प्रकाश डालिए।

2. 'कॉलरिज़ के कविता विषयक सिद्धांत की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

इलियट के अनुसार परम्परा और वैयक्तिक प्रज्ञा सिद्धांत का विश्लेषण कीजिए।

P.T.O.

3. स्वच्छंदतावाद पर एक आलेख लिखिए।

अथवा

'यथार्थवाद, आदर्शवाद के विरोध में उठने वाला आन्दोलन है।' इस कथन के आधार पर यथार्थवाद का विश्लेषण कीजिए। (12)

4. बिम्ब को परिभाषित करते हुए काव्य में उनकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

मिथक को परिभाषित करते हुए साहित्य के साथ उसके अन्तर्सम्बन्धों को व्याख्यायित कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए :- (9×3=27)

(i) त्रासदी के कथानक के अंग

(ii) कॉलरिज का कल्पना सिद्धांत

(iii) संरचनावाद

(iv) उत्तर-संरचनावाद

(v) फैंटेसी

(vi) काव्य में विसंगति-बोध

06/12/2018

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Deshbandhu College Library Kalkaji, New Delhi-19

Sr. No. of Question Paper : 7916 IC

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : हिंदी नाटक/एकांकी

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS**

Semester : V

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) दुनिया में हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा।
मर जाना पै उठके कहीं जाना नहीं अच्छा।।
बिस्तर पे मिस्ले लोथ पड़े रहना हमेशा।
बंदर की तरह धूम मचाना नहीं अच्छा।।
"रहने दो जमीं पर मुझे आराम यहीं है।"
छेड़ों न नक्शेपा हैं, मिटाना नहीं अच्छा।

P.T.O.

अथवा

उपजा इश्वर कोप से, औ आया भारत बीच।
छार-खार सब हिंद करूँ मैं, तो उत्तम नहिं नीच।
मुझे तुम सहज न जानो जी, मुझे इक राक्षस मानो जी।
कौड़ी-कौड़ी को करूँ, मैं सबको मुहताज।
भुखै प्रान निकालूँ इनका, तो मैं सच्चा राज।

(ख) कुछ नहीं, मैं केवल यही कहना चाहती हूँ कि पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु-संपत्ति समझकर उन पर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है। वह मेरे साथ नहीं चल सकता। यदि तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते, अपने कुल की मर्यादा, नारी का गौरव नहीं बचा सकते, तो मुझे बेच भी नहीं सकते हो। हाँ! तुमलोगों को आपत्ति से बचाने के लिए मैं स्वयम यहाँ से चली जाऊँगी।

अथवा

रोष है, हाँ, मैं रोष से जली जा रही हूँ। इतना बड़ा उपहास-धर्म के नाम पर स्त्री-आज्ञाकारिता की यह पैशाचिक परीक्षा, मुझसे बलपूर्वक ली गयी है। पुरोहित! तुमने जो मेरा राक्षस-विवाह कराया है, उसका उत्सव भी कितना सुंदर है! यह जन संहार देखो, अभी उस प्रकोष्ठ में रक्त सनी हुई शकराज की लोथ पड़ी होगी। कितने ही सैनिक दम तोड़ते होंगे,. और इस रक्तधारा में तिरती हुई मैं राक्षसी-सी साँस ले रही हूँ। तुम्हारा स्वस्त्ययन मुझे शांति देगा ?

(ग) धर्म, ईश्वर, भाग्य सबकी उँगलियों से घूमता
आदमी मिट्टी का लोदा चाक पर है झूमता।
नेकी, सच्चाई, शराफत धर के सब कुछ ताक पर।
थोड़े नकटे भी यहाँ इतरा रहे हैं नाक पर।
एक नारा ढलता है हर नई बरबादी के बाद
आसरम ही आसरम खुल गए आजादी के बाद।

अथवा

हाँ! लेकिन यह बेताबी क्यों है ? देखो, आदमी के सामने सबसे बड़ा मसला यह है कि वह अपनी सरप्लस एनर्जी किस तरह काम में ले आए। आदिम जंगलीपन से लेकर आज तक की तहजीब तक जो कुछ भी आदमी ने अपने को दुखी या सुखी बनाने के लिए किया है, वह इस सरप्लस एनर्जी को काम में लाने के लिए। फिर दुःख या सुख तो इतनी ठोस चीजें हैं कि एक दिन तुम देखोगी कि यह यह शीशियों में बिका करेंगी, शीशियों में!

2. 'भारत दुर्दशा' नाटक के आधार पर भारतेंदु की राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'भारत दुर्दशा' नाटक की प्रतीकात्मरकता का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक भारतीय नारी के स्वाभिमान का प्रतीक है – विवेचन कीजिए।

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की रंगमंचीयता पर प्रकाश डालिए। (12)

4. 'बकरी' नाटक में निहित राजनीतिक व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

नाटक के तत्वों के आधार पर 'बकरी' नाटक की समीक्षा कीजिए। (12)

5. 'दीपदान' एकांकी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'सूखी डाली' एकांकी पारिवारिक जीवन की विडंबनाओं का यथार्थपरक चित्रण है – विचार कीजिए। (12)

[This question paper contains 4 printed pages.]

3/12/18

Your Roll No. ....

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Sr. No. of Question Paper : 7987 IC

Unique Paper Code : 12057503

Name of the Paper : अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

Name of the Course : **B.A. (H.) Hindi, CBCS – DSE-I**

Semester : V

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. स्त्री-विमर्श को स्पष्ट करते हुए नारी मुक्ति आन्दोलनों पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

दलित-विमर्श को दिशा लेने में ज्योतिबा फूले और डॉ. भीमराव अम्बेडकर के योगदान की चर्चा कीजिए।

P.T.O.

2. किन्हीं **तीन** अंशों की व्याख्या कीजिए :- (10×3=30)

(क) "बात सिर्फ हदीश की नहीं, बल्कि ईमानदारी से एक रास्ता चुनने की है। जिन्दगी का कोई नजरिया तो होना चाहिए जब आप उस पर चलते हैं तो भटकन कम होगी और सुकून और इन्साफ भी तयशुदा कानून के मुताबिक आपको मिलेगा, वरना जंगल का कानून आपका मानना पड़ेगा और इंसानी दुखों का कोई अंत नहीं होगा।"

अथवा

"सनातन आखेटक, हिरणी-त्रयीं और उनके तीनों शिशुयों के नक्षत्र-दृश्य की गुत्थी गोविन्द-गुरु क मस्तिष्क की किसी कंदरा में अटक कर रह गई। रात का तीसरा पहर समाप्तह हो रहा था। थके-मादे शरीर को आराम देने के लिए नींद को दबे पाँव आना ही होता है। गोविन्द गुरु की झपकती पलकों की गति धीमी हुई और उन्हें पता ही नहीं चला कि उन्हें नींद कब आ गई। वस्तुत: नींद का आगाज होता तो भी कुछ इसी तरह है"।

(ख) शंकित हो मत बैठ कूल पर ओ मांझी,
तेरी वह पतवार रूप है साहिल का
यह तो सच, हर भोर सांध्य सन्देश है,
रोक सका न कौन प्रचंद प्रकाश को?
आज कल्पना विचर रही हिमालय में,
दीख रहा प्रासाद कुटी के छेद से,
वैभव मिले सरलता से तो ठीक है,

वैभव नहीं, मिले तो अरे विभेद से
कितने सावन आए, आकर लौट गए।
कौन बुझा पाया तृषित की प्यास को ?

अथवा

यात्रा लेकिन यहीं समाप्त नहीं हुई है
अभी पार करनी है कई और खाइयाँ फटकारों की
दुख के एक दो और समुद्र
पठार यातनाओं के अभी और दो चार
जब आखिर आएगी वह औरत
जिसे देख तुम और भी विस्मित होओगी
भयभीत भी शायद

(ग) मेरे साथ मेरा अकेलापन हमेशा रहा है, पर यह अकेलापन मुझे जीवन का अर्थ भी समझाता रहा है। मैंने अपने आपको बचाया है, अपने मूल्यों को जीवन में सँजोया। हाँ, टूटी हूँ, बार-बार टूटी हूँ..... पर कहीं तो चोट के निशान नहीं.... दुनिया के पैरों तले रौंदी गई, पर मैं मिट्टी के लौंदे में परिवर्तित नहीं हो पाई। इस उम्र मे भी एक पूरी की पूरी साबुत औरत हूँ, जो जिन्दगी को झेल नही रही बल्कि हँसते हुए जी रही है, जिसे अपनी उपलब्धियों पर नाज है। दोस्ती का हाथ बढ़ाकर जिसकी गर्म हथेलियाँ हर किसी को अपने करीब खींच लेती है।

अथवा

मैं वही पर खड़ा था। मैंने बहुत जोर से पिता जी को एक तमाचा मारा। उन्होंने मुझे उलटकर वैसे ही मारा। उनका तमाचा, इतनी जोर का था कि मैं कुछ देर के लिए चौंधियाँ सा गया था। फिर कुछ पल के लिए कुछ भी दिखाई नहीं दिया। मुझे ऐसा लगा मानो मैं अँधा सा हो गया। किन्तु इस घटना का परिणाम यह हुआ कि आगे पिताजी माँ को मारने से घबराने लगे। बस्ती के लगभग सभी लोगों ने मुझे सहीं ठहराया। आगे चलकर पिता जी के प्रति मेरी घृणा विकराल रूप लेती चली गई।

3. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए :- (10×3=30)

(क) 'अन्या से अनन्या' मे अभिव्यक्त स्त्री चेतना।

(ख) 'सलाम' कहानी में व्यक्त दलित जीवन के प्रश्न।

(ग) सहानुभूति बनाम स्वानुभूति।

(घ) समाजवादी नारीवाद।

(ङ) स्त्री-विमर्श की दृष्टि से 'खुदा की वापसी' की समीखा।

(च) जल, जंगल और जमीन का प्रश्न।

8/12/2018

This question paper contains 2 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

S. No. of Question Paper : **8150**

Unique Paper Code : **12057505** IC

Name of the Paper : **भारतीय साहित्य की संक्षिप्त रूपरेखा**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi-CBCS-DSE II**

Semester : **V**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

1. भारतीय साहित्य की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उसकी विविधता पर प्रकाश डालिए।

अथवा

भाषा, साहित्य और संस्कृति का अन्त:संबंध स्पष्ट करते हुए भारतीय साहित्य के सामासिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 12

2. वैदिक साहित्य की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

अपभ्रंश साहित्य का परिचय देते हुए उसके योगदान की चर्चा कीजिए। 12

3. आधुनिकता-पूर्व बांग्ला पद्य साहित्य पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

अथवा

उर्दू साहित्य के योगदान पर एक लेख लिखिए। 12

4. भक्ति आंदोलन की सामाजिक भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

आधुनिक भारतीय साहित्य में उत्तर आधुनिक संदर्भों की चर्चा कीजिए। 12

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : 9×3=27

(*i*) नवजागरण

(*ii*) पालि साहित्य

(*iii*) लौकिक संस्कृत साहित्य

(*iv*) आधुनिकता-पूर्व उड़िया साहित्य

(*v*) भक्ति आंदोलन और पंजाबी साहित्य

(*vi*) नवजागरण का महत्व

(*vii*) मणिपुरी गद्य साहित्य।